

SHRI KANWAL SIBAL

Shri Kanwal Sibal joined the Indian Foreign Service in 1966. His diplomatic career spans 41 years. He reached the topmost position in the India Foreign Service on his appointment as Foreign Secretary to the Government of India from July 2002 to November 2003.

2. Born on November 18, 1943, Shri Sibal began his career in France (1968-1973), was Deputy Spokesman in the Ministry of External Affairs (1973-1975). He served in Tanzania (1976-1979) and Portugal (1980-1982). He was Deputy Chief of Mission in Nepal (1982 -1985) and Joint Secretary in the Ministry of External Affairs (1986-1989).

3. Shri Sibal had several Ambassadorial assignments. He was India's Ambassador to Turkey (1989-1992) and Deputy Chief of Mission in the United States (1992-1995), with the rank of Ambassador. He served thereafter as India's Ambassador to Egypt (1995-1998) and France (1998-2002). He was India's Ambassador to Russia (2004-2007).

4. As Foreign Secretary, Shri Sibal led the External Affairs Ministry with panache, building the morale of the service as well as the public profile of the post of Foreign Secretary by engaging in vigorous public diplomacy. The strategic dialogue with the United States of America on nuclear issues was initiated under his watch. His role in final decision-making on the issue of India lending some form of military support to the USA in the second Iraq war was noteworthy.

5. As Deputy Chief of Mission in Washington, Shri Sibal robustly defended India's position on nuclear and missile issues at a time when India was under severe pressure. As Ambassador in Paris, he played a commendable role in opening the doors of a strategic dialogue- the first with any country- after our 1998 nuclear tests and ensuring French understanding on the vital step India took and the French decision not to join in imposing sanctions on India. As Ambassador to Russia, Shri Sibal ably nurtured the sensitive aspects of India-Russia ties.He was a member of India's National Security Advisory Board from 2008 to 2010.

6. Shri Sibal is on the Board of the New York based East-West Institute. In that capacity, he was involved in organizing the first. International Cyber Security Summit in New Delhi. He is on the Advisory Board of the Vivekanand International Foundation as well as Dean, Centre for International Relations and Diplomacy. He is also the Chairman of the Forum of Strategic and Security Studies.

7. Shri Sibal is an Editorial Consultant to The Indian Defence Review and Foreign Affairs Editor of Force-the two most prominent defence and security related publications to which he has contributed several articles on our relations with major powers.

8. Shri Sibal has written more than 400 Op-Eds and other articles for major national journals and periodicals on international affairs. It is widely accepted that amongst career diplomats the range of the subjects on which he writes is unmatched in its breadth. He has delivered several key-note addresses on the strategic challenges facing India in many institutions here and abroad, including the National Defence College, the United Services Institute, the Institute of Defence and Studies and Analyses and so on. He appears regularly on TV and his interventions are appreciated for their balance, maturity and clarity. He is a member of several Track 2 mechanisms.

9. During his career in the Indian Foreign Service and afterwards when he had more freedom to express himself Shri Sibal has come across as someone with an independent and forceful mind, willing to express his views without fear, blunt where necessary, unwilling to yield ground intellectually where the country's interests are involved, firm in exposing the cant and hypocrisy in international relations, and as one who views international developments always in the Indian perspective and from the vantage point of the country's interests. He has rendered laudable service to the country as a civil servant of repute.His book of poems "Snowflakes of Time" which spans the world of personal sentiments and political satire has been published by Bloomsbury. He has been decorated with Grand Officer of the French Ordre National du Merite, the second

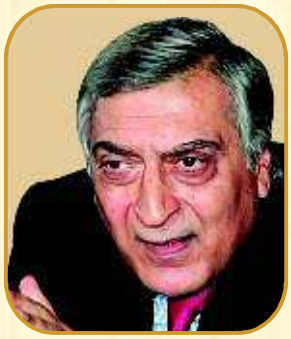

श्री कंवल सिबल

श्री कंवल सिबल ने 1966 में भारतीय विदेश सेवा में कार्यभार ग्रहण किया। आपका राजनयिक करिअर 41 वर्ष का रहा है। जुलाई 2002 से नवम्बर 2003 तक भारत सरकार के विदेश सचिव के पद पर आपकी नियुक्ति होने के पश्चात आपने भारतीय विदेश सेवा के सर्वोच्च स्थान को प्राप्त किया।

2. आपका जन्म 18 नवम्बर, 1943 को हुआ था। आपने अपना करिअर फ्रांस से शुरू किया और आप विदेश मंत्रालय में (1973-75) उप-प्रवक्ता रहे। आपने तंजानिया (1976-1979) और पुर्तगाल (1980-82) में भी सेवाएं प्रदान कीं। आप नेपाल में भारतीय मिशन के उप-मुख्य (डिप्टी चीफ) (1982-85) और विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव (1986-1989) रहे हैं।

3. आपके पास विभिन्न राजदूत संबंधी कार्य रहे। आप तुर्की में भारत के राजदूत (1989-1992) और राजदूत के रैंक में अमेरिका में मिशन के डिप्टी चीफ (1992-95) रहे हैं। इसके बाद आपने मिस्र में (1995-1998) और फ्रांस में (1998-2002) भारत के राजदूत के रूप में कार्य किया। आप रूस में भारत के राजदूत (2004-2007) रहे हैं।

4. विदेश सचिव के रूप में आपने बहुत ही सुंदर तरीके से विदेश मंत्रालय का नेतृत्व किया, सेवा का मनोबल बढ़ाया और साथ ही साथ सशक्त पब्लिक डिप्लोमेसी में संलग्न होकर विदेश सचिव के पद की पब्लिक प्रोफाइल को सशक्त किया। आपकी ही निगरानी में परमाणु मुद्दे पर संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ कूटनीतिक बातचीत आरम्भ की गई थी। दूसरे इराक युद्ध में यू एस ए को भारत द्वारा सैन्य सहायता प्रदान करने संबंधी मुद्दे के बारे में अंतिम निर्णय लिये जाने में आपकी अहम भूमिका रही।

5. वाशिंगटन में मिशन के डिप्टी चीफ के रूप में, आपने उस समय भारत की परमाणु और मिसाइल मुद्दे पर जोरदार पैरवी की जब भारत पूरे दबाव में था। पैरिस में राजदूत के रूप में आपने भारत के 1998 के परमाणु परीक्षणों के बाद – किसी भी राष्ट्र के साथ पहली बार – कूटनीतिक बातचीत की शुरूआत करने और भारत द्वारा लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय को फ्रांस को समझाने और भारत पर प्रतिबंध लगाने में फ्रांस के शामिल नहीं होने के निर्णय में सराहनीय भूमिका निभायी। रूस में राजदूत के रूप में आपने भारत-रूस के संबंधों के नाजुक पहलुओं को दक्षता से निभाया। आप 2008 से 2010 तक भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड के सदस्य रहे हैं।

6. आप न्यूयॉर्क आधारित ईस्ट-वेस्ट संस्थान के बोर्ड में भी रहे हैं। इस हैसियत से नई दिल्ली में प्रथम अंतरराष्ट्रीय साइबर सुरक्षा शिखर-सम्मेलन का आयोजन कराने में भी आपकी भूमिका रही है। आप विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन के सलाहकार बोर्ड में हैं और सेंटर फॉर इंटरनेशनल रिलेशन्स एंड डिप्लोमेसी के अध्यक्ष हैं। आप राजनीतिक और सुरक्षा अध्ययन मंच के अध्यक्ष भी हैं।

7. आप भारतीय रक्षा समीक्षा के संपादकीय सलाहकार और बल के विदेशी विषयक संपादक हैं – ये दोनों रक्षा और सुरक्षा संबंधी महत्वपूर्ण प्रकाशन हैं जिनके लिए आपने बड़े शक्तिशाली देशों के साथ भारत के संबंध के बारे में विभिन्न लेख भी लिखे हैं।

8. आपने 400 से अधिक ओप-एड्स और अंतरराष्ट्रीय मामलों के बारे में बड़ी राष्ट्रीय पत्रिकाओं और अखबारों हेतु अन्य लेख लिखे हैं। यह माना जाता है कि करिअर-राजनयिकों में जिन विभिन्न विषयों पर आप लिखते हैं उसकी सीमा अद्वितीय है। आपने राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय, द यूनाइटिड सेवा संस्थान, रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान और अन्य संस्थानों सहित देश और विदेश के बहुत से संस्थानों में भारत द्वारा सामना की जा रही राजनयिक चुनौतियों के बारे में विभिन्न मुख्य संबोधन दिए हैं। आप टी.वी. में नियमित रूप से दिखाई देते हैं और आपकी मध्यस्थताओं का संतुलन, परिपक्वता और स्पष्टता के मायने में सराहना की जाती है। आप विभिन्न ट्रैक-2 मैकेनिज्म के सदस्य हैं।

9. भारतीय विदेश सेवा में आपके करिअर के दौरान और उसके बाद जब आपको अभिव्यक्ति की और अधिक स्वतंत्रता मिली, आप स्वावलंबी और सुदृढ़ विचारधारा बनकर सामने आए, जो बिना किसी डर के और जहां जरूरी हो कठोरता से अपने विचार प्रस्तुत करने को तत्पर रहते हैं; जहां देश के हितों की बात हो, आप बौद्धिक रूप से झुकते नहीं हैं और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में आडम्बर और पाखंड को प्रकट करने में झिझकते नहीं हैं और आप भारतीय परिदृश्य और देश के हितों के नजरिए से ही हमेशा अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों को देखते हैं। विख्यात सिविल सेवक के रूप में आपने देश की सराहनीय सेवा की है। व्यक्तिगत भावों और राजनीतिक व्यंग्य को दर्शाती आपकी कविताओं की पुस्तक "स्नोफ्लेक्स ऑफ टाइम" ब्लूम्सबरी द्वारा प्रकाशित की गई है। भारत-फ्रांस संबंधों के प्रति की गई सेवा के लिए, आपको "फ्रेंच आर्डर नेशनल दू मेरित के ग्रांड आफिसर", से नवाजा गया है जो इस श्रेणी का द्वितीय उच्चतम सम्मान है।